बरेली, रविवार
7 जून, 2026
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
कुल 20+4+4=28

दैनिक जागरण

PAGE NO, IV, MIDDLE

कमला ने जीती ब्लड कैंसर की जंग, सफल बोन मैरो ट्रांसप्लांट

- पीठ दर्द की समस्या से परेशान कमला की जांच में पाया गया था मल्टीपल मायलोमा
- 19 दिन कोरेंटाइन रखने के बाद वार्ड में किया गया शिफ्ट, बरेली में पहला ट्रांसप्लांट

जागरण संवाददाता, बरेली : एक साल से अधिक समय से पीठ दर्द से परेशान उत्तराखंड के बनबसा की 47 वर्षीय कमला ने मल्टीपल मायलोमा (ब्लड कैंसर) से जंग जीत ली है। 19 मई को एसआरएमएस मेडिकल कालेज में उनका सफल आटोलोगस बोन मैरो ट्रांसप्लांट (अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण) हुआ। 19 दिन तक आइसीयू में कोरेंटाइन रखने के बाद उन्हें छह जून को वार्ड में शिफ्ट किया गया। जल्द ही उन्हें छुट्टी देकर घर भेजा जाएगा और वह धीरे-धीरे सामान्य जीवन जी सकेंगी।

कमला के पति सेवानिवृत्त फौजी हैं। पीठ में दर्द होने पर कमला ने डाक्टरों से परामर्श लिया लेकिन दर्द ठीक नहीं हुआ। इस पर उन्होंने एसआरएमएस मेडिकल कालेज में दिखाया। यहां जांच में पता चला कि उन्हें मल्टीपल मायलोमा है। उन्हें पहले टारगेटेड थेरेपी और कीमोथेरेपी के जरिये कैंसर मुक्त किया गया। मल्टीपल मायलोमा के दोबारा होने के खतरे को कम करने के लिए उनका बोन मैरो ट्रांसप्लांट किया गया। इसके बाद मरीज को कोरेंटाइन कर विशेष देखरेख की गई। मरीज की लड़ने की इच्छाशक्ति से कोई दिक्कत नहीं हुई।

एसआरएमएस में पहला सफल ट्रांसप्लांट, जल्द बनेगा विभाग: एसआरएमएस मेडिकल कालेज में प्रेस कांफ्रेंस में संस्थापक और चेयरमैन देवमूर्ति ने बताया कि कमला का मेडिकल कालेज में रुहेलखंड और कुमायुं रीजन का पहला सफल बोन मैरो ट्रांसप्लांट है। अब मरीजों को दिल्ली, लखनऊ और मुंबई का रुख नहीं करना पड़ेगा। इससे मरीजों का समय बचेगा।

अस्पताल में चार और मरीजों का भी जल्द बोन मैरो ट्रांसप्लांट भी किया जाएगा। जल्द ही अस्पताल में बोन मैरो ट्रांसप्लांट विभाग भी बनाया जाएगा। नेपाल के मरीज का अगला ट्रांसप्लांट किया जाएगा। आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डा. पियूष अग्रवाल ने कहा कि कैंसर एक महामारी है।

न्यूयार्क में हो या मुंबई में कैंसर का इलाज रेडिएशन, सर्जरी और कीमोथेरेपी से ही किया जाता है। यही सुविधाएं एसआरएमएस मेडिकल कालेज में उपलब्ध हैं। प्रेस कांफ्रेंस में डायरेक्टर आदित्य मूर्ति, प्रिंसिपल एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डा. एमएस बुटोला, मेडिकल सुपरिटेंडेंट डा. आरपी सिंह, कैंसर विभाग स्टाफ और बोन मैरो ट्रांसप्लांट टीम के मेंबर मौजूद रहे।

एसआरएमएस मेडिकल कालेज में बोन मैरो ट्रांसप्लांट की जानकारी देते चिकित्सक • जागरण

मल्टीपल मायलोमा का बोन मैरो ट्रांसप्लांट से नियंत्रण बेहतर : डा. अनादि

मेडिकल ऑंकोलाजिस्ट डा. श्रीनिवास अनादि नायडू ने बताया कि मल्टीपल मायलोमा ब्लड कैंसर का एक प्रकार है, जो बोन मैरो में मौजूद प्लाज्मा कोशिकाओं को प्रभावित करता है और इससे हड्डियां कमजोर हो जाती है। रीढ़ और छाती की हड्डियों में तेज दर्द, अत्यधिक थकान और कमजोरी, खून की कमी, रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने से बार-बार बीमार होना मल्टीपल मायलोमा के सामान्य लक्षण हैं। कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने वाली दवाएं यानी कीमोथेरेपी और टारगेटेड थेरेपी, हड्डियों के दर्द में राहत दिलाने और ट्यूमर को सिकोड़ने के लिए रेडिएशन थेरेपी और स्टेम सेल ट्रांसप्लांट से मल्टीपल मायलोमा को नियंत्रित किया जाता है।

बोन मैरो ट्रांसप्लांट को स्टेम सेल्स ट्रांसप्लांट भी कहते : डा. दिशा

क्लीनिकल हेमेटोलाजिस्ट डा. दिशा सत्या ने बताया कि बोन मैरो ट्रांसप्लांट में मरीज के खुद या डोनर से स्वस्थ स्टेम सेल्स निकालकर मरीज के रक्त प्रवाह में ट्रांसफ्यूज किए जाते हैं। इसका उपयोग ब्लड कैंसर, थैलेसीमिया और सिकल सेल एनीमिया जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। बोन मैरो ट्रांसप्लांटेशन में मरीज का बोन मैरो और डोनर के बोन मैरो से मेल खाना जरूरी है। यह दो प्रकार का आटोलोगस और एलोजेनिक ट्रांसप्लांट होता है।